चतुर्थ अध्याय

"अलका सरावगी के उपन्यास : चरित्र-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन"

चतुर्थ अध्याय

''अलका सरावगी के उपन्यास : चरित्र सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन''

विषय-प्रवेश :

पात्र या चरित्र-चित्रण उपन्यास का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्व है। प्रेमचंद के मतानुसार 'मानव चरित्र का चित्र' तथा हेनरी जेम्स के मतानुसार 'जीवन का दर्पण' है। उपन्यास के रहस्य को खोलने की दृष्टि से पात्र या चरित्र-चित्रण बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। चरित्र-चित्रण का महत्त्व बताते हुए डॉ. दंगल झाल्टे लिखते हैं - ''उपन्यास में चरित्र-चित्रण को अत्यधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है क्योंकि मनुष्य जीवन के विविध रूपों एवं आयामों को उद्घाटित करने में वही तत्व कथा से अधिक सक्षम प्रतीत हुआ।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि कथा से ज्यादा चरित्र-चित्रण का महत्त्व होता है। वस्तुत: उपन्यास का प्रधान विषय (उद्देश्य) मनुष्य तथा उसका चरित्र है। गोविंद त्रिगुणायत के मतानुसार - ''मानव एक पहेली है, दूसरों के लिए ही नहीं, प्राय: अपने लिए भी। उस पहेली को सुलझाने की, उस रहस्य को खोलने की सायास या अनायास चेष्टा प्रत्येक उपन्यास में मिलती है। इस दृष्टि से पात्र और उनका चरित्र-चित्रण उपन्यास का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व बन जाता है।''[2] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पात्र मानव की पहेली का रहस्य खोलने का महत्त्वपूर्ण प्रयास करते हैं। उपन्यास में पात्रों के व्यक्तित्व गुण-अवगुण की छवि पाठकों के हृदय में हमेशा के लिए अपनी जगह बना लेते हैं। इसी कारण कुछ पात्र अमर सिद्ध होते हैं। उदाहरण स्वरूप प्रेमचंद के गोदान उपन्यास का नायक होरी जो भारतीय किसान का प्रतिनिधि है जो आज भी अमर है। परमलाल गुप्त पात्रों के अमरत्व के बारे में लिखते हैं - ''उपन्यास के पात्रों का अमरत्व लेखक के अमरत्व का प्रतीक है।''[3] स्पष्ट है कि लेखक अपनी छवि पात्र या चरित्र-चित्रण के द्वारा पाठकों पर छोड़ता है।

चरित्र-चित्रण को व्यक्त करने की विभिन्न विधियाँ होती हैं, जैसे - विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक, संवादात्मक, मनोवैज्ञानिक, आत्मकथात्मक तथा अभिनयात्मक आदि। उपन्यास में पात्र या चरित्र-चित्रण में स्वाभाविकता, बौद्धिकता और सहृदयता आदि

---

1. डॉ. दंगल झाल्टे - उपन्यास समीक्षा के नए प्रतिमान, पृष्ठ - 60
2. गोविंद त्रिगुणायत - शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, पृष्ठ - 419
3. परमलाल गुप्त - सियाराम शरण गुप्त का साहित्य : एक मूल्यांकन, पृष्ठ - 236

के कारण उपन्यास में वास्तविकता प्रतीत होती है। उपन्यास की चरित्र-चित्रण की दृष्टि से पात्रों के मुख्य दो भेद होते हैं - प्रधान पात्र तथा गौण पात्र। लेकिन अध्ययन की सुविधा के अनुसार चरित्र-चित्रण को तीन भागों में विभाजित किया है, जैसे - प्रधान पात्र, गौण पात्र तथा अन्य पात्र आदि। प्रधान पात्रों में नायक तथा नायिका को सम्मिलित किया गया है। गौण पात्रों में प्रधान पात्र को छोड़कर या प्रधान पात्र के साधन बनाकर उपस्थित होनेवाले पात्रों का विवेचन प्रस्तुत है। अन्य पात्रों में जो पात्र नाममात्र रूप में आए हैं, उनका नामोल्लेख किया गया है। अत: यहाँ अलका सरावगी के आलोच्य उपन्यासों के चरित्र-सृष्टि का क्रमश: मूल्यांकन प्रस्तुत है -

4.1 **कलि-कथा : वाया बाइपास :**

अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में पात्रों की भरमार होने के कारण पात्रों को प्रधान पात्र, गौण पात्र तथा अन्य पात्र में विभाजित कर उनका विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत किया है।

4.1.1 **प्रधान पात्र -**

जो पात्र उपन्यास की कथावस्तु का मुख्य रूप से तथा सीधा संबंध रखते हैं; साथ ही कथावस्तु को गति देते हैं, या उससे विकसित होते हैं, उन्हें प्रधान पात्र कहा जाता है। अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में मुख्य पात्र के रूप में किशोरबाबू का चरित्र है। उसका संक्षिप्त विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

4.1.1.1 : **किशोरबाबू :-**

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक पात्र हैं, फिर भी उपन्यासकार ने किशोरबाबू के चरित्र पर अधिकतम प्रकाश डाला हुआ दिखाई देता है। किशोरबाबू प्रस्तुत उपन्यास का नायक जो मारवाड़ी परिवार का है। रवींद्र त्रिपाठी के मतानुसार - "उपन्यास की कहानी किशोरबाबू नाम के कलकत्ता में बसे एक मध्यवर्गीय मारवाड़ी व्यक्ति के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है।"[1] कहना आवश्यक नहीं कि उपन्यास में मारवाड़ी परिवार के किशोरबाबू का जीवन-चरित्र प्रस्तुत है। किशोरबाबू अपनी पत्नी सरोज से प्रेम करनेवाले अपने भाभियों के

1. सं. राजेंद्र यादव - हंस, जून 1998, पृष्ठ - 89

साथ आदर और सम्मान के साथ व्यवहार करनेवाले हैं। उनका व्यक्तित्व भाग्यशाली, अभिनेयता, अंधविश्वासी, ईर्ष्यालू तथा स्वच्छंद जीवन जीनेवाला दृष्टिगोचर होता है। उनकी अन्य कुछ विशेषताओं के बारे में पहल करना समीचीन होगा।

4.1.1.1-1 उपन्यास का नायक

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास के नायक के बारे में मतभेद हैं। कई आलोचक कलकत्ता शहर को ही उपन्यास का नायक मानते हैं। उपन्यास में पूरी कथा किशोरबाबू के इर्द-गिर्द घूमती है। उपन्यास में एक जगह लेखिका लिखती हैं - "यह कथा किशोरबाबू की है किंतु कथाकार को लगता है कि कुछ घटनाओं की पृष्ठभूमि जाने बिना पूरी तरह कथा खुलती नहीं।"[1] स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास के नायक किशोरबाबू ही है।

4.1.1.1-2 माँ से प्रेम करनेवाला

किशोरबाबू अपनी माँ से बहुत प्रेम करते हैं। उनको अपनी माँ के प्रति गहरी आस्था है। उसके लिए दुनिया में सबसे पहले माँ है, उसके बाद और कोई। इतना ही नहीं वह अपने खून पर अपनी जन्म देनेवाली माँ का ही अधिकार मानता है। अत: कहना सही होगा कि किशोरबाबू माँ से प्रेम करनेवाले हैं।

4.1.1.1-3 नेतृत्व-संपन्न

व्यक्ति-विशेषताओं में नेतृत्व यह गुण महत्त्वपूर्ण होता है। एक दिन किशोरबाबू बनवारी के बेटे के साथ बनवारी के घर जाते हैं। उन दोनों में वार्तालाप हो रहा था। किशोरबाबू शांतनु की याद बनवारी को दिलाते हैं। उसका नाम लेते ही दोनों हँसते हैं और हँसते-हँसते वे अपने स्कूल की दुनिया में खो जाते हैं। तब बनवारी किशोरबाबू से कहते हैं - "तुम भी तो भाई, स्कूल में उसी के पिट्ठू बन गए थे। कितनी चिंता रहती थी सबको तुम्हारी। याद है न उन्नीस सौ पैंतालीस में जब आजाद हिंद फौज के अफसरों शाहनवाज-ढिल्लों-सहगल का अभिनंदन हुआ था देशबंधु पार्क में, तब कैसे तुम सारे स्कूलों के लड़कों को बटोर कर लीड़री करते हुए जुलूस लेकर पैदल गए थे देशबंधु पार्क? याद आया?"[2] बनवारी के उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि किशोरबाबू का चरित्र नेतृत्व-संपन्न है।

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 164
2. वही, पृष्ठ - 89

4.1.1.1-4 भविष्य के प्रति सजग

किशोरबाबू भविष्य के प्रति सजग रहनेवाले व्यक्ति हैं। किशोरबाबू का बेटा पंद्रह अगस्त के दिन 'सरप्राइज' के रूप में गाड़ी की चाबी उनके हाथ में देता है। तब किशोरबाबू का बेटा उन्हें कहता है - 'पापा रुपए किसी से मांगने नहीं पड़े। बस किस्तों में गाड़ी की रकम चुका देंगे।' तब किशोरबाबू कहते हैं - ''तो तुमने भविष्य के रुपए आज खर्च कर दिए हैं - यानी वो रुपए जो तुम आगे कमाओगे।''[1] किशोरबाबू का यह कथन उसके भविष्य के प्रति सजग होने के संकेत देता है।

4.1.1.1-5 मेहनती

किशोरबाबू मेहनती इन्सान हैं। वे दिन-रात मेहनत करके एरिया में सबसे बढ़िया आधुनिक मकान बनाते हैं। उन्हें न बाप-दादों से कुछ मिला था और न मामा-मामी से। लड़कियों की शादियों में बहुत पैसे खर्च करते हैं और धूमधाम से बेटियों की शादियाँ भी करते हैं। यह सब वे अपनी मेहनत के बल-बूते पर करते हैं।

4.1.1.1-6 स्वाभिमानी

किशोरबाबू स्वाभीमान से जीवन जीनेवाले व्यक्ति हैं। वे आत्म-सम्मान से जीवन जीते हैं। किशोरबाबू ने अपने परिवार की मान-मर्यादा तथा इज्जत, जी-जान से संजोई रखी। अपने परिवार की तरफ कोई ऊंगली न उठा सके इसका वे हमेशा ध्यान रखते हैं। किशोरबाबू की माँ उन्हें कहती है - ''बेटा लक्ष्मी फिरती-घिरती छाया होती है। धनसंपत्ति तो आदमी फिर पा लेता है; पर इज्जत एक बार चली जाए तो वापस नहीं आती।''[2] माँ की इस बात को वे कभी नहीं भूले। उनके घर में कुल मिलाकर आठ स्त्रियाँ होने के कारण किसी दूसरे पुरुष को घर में प्रवेश नहीं करने दिया। वे अपनी इज्जत बचाकर हमेशा स्वाभिमान से जीवन जीते रहे।

4.1.1.1-7 देश-प्रेमी

किशोरबाबू को अपने देश तथा मातृभूमि से प्रेम है। वे विदेशी चीजों का इस्तमाल नहीं करते, बल्कि भारतीय कंपनियों में बनी हुई चीजों को ही उपयोग करते हैं।

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 198
2. वही, पृष्ठ - 201

जैसे - साबुन और मंजन आदि। अत: कहना होगा कि किशोरबाबू स्वदेशी के पुरस्कर्ता हैं तथा देशप्रेमी हैं।

4.1.1.1-8 जिज्ञासु

किसी गूढ़ रहस्य को जानने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति जिज्ञासु कहलाता है। किशोरबाबू में यही प्रवृत्ति है। एक दिन जब रात के तीन बजे कोयल की आवाज से उनकी नींद खुल जाती है, तो वे अपनी माँ की आँखे खुली देखकर पूछते हैं - ''मां मुझे बताओ न अंग्रेजों से दादाजी लोगों का क्या नाता था?''[1] इससे यह स्पष्ट होता है कि किशोरबाबू में अपने दादाजी के बारे में जानने की इच्छा है, जिसे जिज्ञासा कहा जा सकता है।

4.1.1.1-9 जिद्दी

किशोरबाबू जिद्दी हैं। किशोरबाबू की छोटी लड़की अपनी दादी से पूछती है कि तुमने पापा को ऐसा क्यों बनने दिया कि जिसके कारण हम उनकी ही मर्जी से सोएं, जागें, पढ़ें, हँसे कभी जिद न करें और कभी न रोएं आदि। तब दादी बड़ी-बड़ी आँखे करके कहती है - ''हो गया तेरा पापा ऐसा। मैं क्या करती? जिद्दी तो शुरू से था। औरतें ही औरतें घर में। बाप-भाई का साया तो रहा नहीं उस पर, कि किसी के काबू में रहता। माँ, भाभी, बहू फिर तुम पाँचों लड़कियाँ। हमेशा अपनी ही चलाई। अब आदत पड़ गई।''[2] दादी का यह कथन किशोरबाबू के जिद्दी स्वभाव का परिचय देता है।

4.1.1.1-10 डरपोक

किशोरबाबू डरपोक हैं। डर के कारण कुछ भी करने की उनकी हिम्मत नहीं होती। वह अपनी मामा के दुकान पर बैठना नहीं चाहता लेकिन मामाजी के डर के कारण वह कह नहीं पाता। वह नाटक में अच्छा अभिनय करता है। नाट्य परिषद का बाकायदा सदस्य बनना चाहता है लेकिन वह भी मामाजी के डर के कारण नहीं बनता। हर जगह वह मामाजी से डरता है। इससे यह पता चलता है कि किशोरबाबू डरपोक हैं।

4.1.1.1-11 दिल का मरीज

किशोरबाबू दिल के मरीज हैं। उपन्यास के पहले पृष्ठ पर ही उनकी बाइपास

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 24
2. वही, पृष्ठ - 59

सर्जरी होने का संकेत मिलता है। लेखिका किशोरबाबू की हकीकत बताते समय लिखती हैं - "कलकत्ता शहर के सबसे नामी अस्पताल में बाइपास सर्जरी करवाकर जब किशोरबाबू होश में आए तो उन्होंने पाया कि उनके सिर के पिछले हिस्से में बहुत दर्द है।"[1] इससे यह स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि किशोरबाबू दिल के मरीज हैं।

4.1.1.1-12 दकियानूसी मानसिकता

आज स्त्री भले ही हर क्षेत्र में अग्रेसर होती रही है। हर क्षेत्र में अपना स्थान प्राप्त कर रही हो लेकिन जब घर का कोई निर्णय लेना हो तो उन्हें अपने पति पर ही निर्भर रहना पड़ता है। वह स्वयं निर्णय नहीं ले सकती। यह बात भी सच है कि भारतीय पुरूष की पुरूषी मानसिकता स्त्रियों को अपने इच्छा के अनुसार नहीं जीने देती। पुरूष हमेशा स्त्रियों पर अपना अधिकार जताते रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास का किशोरबाबू ऐसे ही दकियानुसी मानसिकता का आदमी है। जो हमेशा अपनी माँ, भाभी तथा बेटियों पर अधिकार जताते रहे हैं। इसी संदर्भ में किशोर बाबू की छोटी बेटी अपनी दादी से कहती है - "दादी, तुमने क्यों बनने दिया पापा को ऐसा? ऐसा लगता है जैसे हम किसी मिलिट्री रूल में रह रहे हो। उनकी ही मर्जी से हम सोयें, जगें, पढ़ें, हंसें और कभी जिद न करें - कभी न रोएं ऐसा क्यों है?"[2] किशोरबाबू के बेटी का उक्त कथन किशोरबाबू की ही नही तो भारतीय पुरूष की पुरूषी मानसिकता का परिचय देता है। कहना आवश्यक नहीं कि किशोरबाबू दकियानूसी मानसिकता के आदमी हैं।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि किशोरबाबू ही प्रस्तुत उपन्यास का नायक है। मातृ-प्रेमी, नेतृत्व-संपन्न, भविष्य के प्रति सजग, मेहनती, स्वाभिमानी, देश-प्रेमी, जिज्ञासु, जिद्दी, डरपोक, दिल का मरीज तथा दकियानूसी मानसिकता आदि उनकी चरित्र की विशेषताएँ हैं।

4.1.2 गौण पात्र -

उपन्यास में नायक या नायिका को छोड़कर अन्य पात्र गौण पात्र कहे जाते हैं। गौण पात्र कथावस्तु को गति देते हैं, प्रधान पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं और उसकी आलोचना भी करते हैं। वे मुख्य पात्र के सहायक के रूप में होते हैं लेकिन पाठकों पर अपनी

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 5
2. वही, पृष्ठ - 59

छाप डाले बिना नहीं रहते। अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास के शांतनु तथा अमोलक गौण पात्र हैं, जिनके चरित्र का विवेचन-विश्लेषण निम्नांकित है -

4.1.2.1 : **अमोलक :-**

अमोलक प्रस्तुत उपन्यास में प्रतीक पात्र के रूप में आया है जो किशोरबाबू का स्कूली मित्र है। डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी के मतानुसार - ''उसके दो मित्र हैं - गांधी का पक्का अनुयायी अमोलक एवं सुभाषबाबू का कट्टर समर्थक शांतनु।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि अमोलक किशोरबाबू का मित्र तथा गांधी जी का अनुयायी भी है। वह लेक रोड के बंगाली पाड़े का रहनेवाला है। अमोलक गांधी जी के सत्य, अहिंसा तथा परोपकार आदि विचारों से प्रभावित तो है ही साथ ही गांधीवादी विचारधारा का समर्थक भी है। स्वयं अमोलक के शब्दों में - ''गांधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का मार्ग कायरों की कायरता छिपाने की नीति नहीं है जैसा कि गांधी जी के विरोधी समझते हैं बल्कि वह बहुत गहरी आत्मिक शक्ति का मार्ग है।''[1] कहना सही होगा कि अमोलक का यह कथन गांधीजी के गहरी आत्मिक शक्ति का परिचय देता है। वह गांधीजी के अहिंसावादी विचारों का पक्का अनुयायी है। समाजसेवा अमोलक का महत्त्वपूर्ण गुण है, जिससे वह गांधी का अनुयायी सिद्‌ध होता है। किशोर जब हिंदू और मुसलमानों के दंगे-फसाद देखकर घर लौटता है तब माँ उसे अमोलक के आने की सूचना देती है। उस वक्त 'सुरंगी' मैना का पिंजरा देखकर किशोर चौंक जाता है। तब माँ किशोर से कहती है - ''अमोलक आया था और मैंने गिगियाबुआ की हालत बताई, तो सुरकी कल के मकान से मुसलमानों के मुहल्ले में रहनेवाले हिंदुओं और हिंदुओं के मुहल्ले में रहनेवाले मुसलमानों को निकाल रहे हैं। उसके पिता और चाचा मोटर पर 'लाऊडस्पीकर' लगाकर हिंदू-मुसलमानों से शांति की अपील कर रहे हैं। एक सारजेन्ट को साथ लेकर अमोलक कुछ लोगों के साथ पैदल घूम रहा है। बड़ा सेवा-भाव है इस लड़के में। कितना पुण्यवान है।''[2] किशोर की माँ का यह कथन अमोलक की समाजसेवा की भावना को स्पष्ट कर देता है।

अमोलक अध्ययनशील है। वह पढ़ाई दिन-रात करता है। किशोरबाबू उसके बारे में कहता है - ''अमोलक इन दिनों रात-दिन किताबें पढ़ने में लगा है। न जाने उससे

---

1. डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी - हिंदी उपन्यास : समकालीन विमर्श, पृष्ठ - 146
2. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 173

क्या बनना है।''[1] इससे यह स्पष्ट होता है कि अमोलक अध्ययनशील है भविष्य के प्रति देखने का इनका दृष्टिकोण दूरदर्शी है। वह अपने भविष्य के बारे में सोचता रहता है। मैट्रिक के बाद क्या करना है इसी बात को लेकर वह परेशान है। उसे अपने बचपन से ही भविष्य के प्रति चिंता है। अत: उसमें दूरदृष्टि दिखाई देती है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि अमोलक गांधीजी का प्रतीक पात्र है। उनमें अध्ययनशीलता, दूरदृष्टि, सच्चा समाजसेवक और अहिंसा आदि गुणों का परिचय मिलता है।

4.1.2.2 : शांतनु -

प्रस्तुत उपन्यास में किशोरबाबू तथा अमोलक के साथ-साथ शांतनु का चरित्र भी महत्त्वपूर्ण है। वह सुभाषबाबू का कट्टर समर्थक है। वह मातृहीन है। माँ न होने का दु:ख उन्हें बार-बार सताता है। उसके पिता का नाम डॉ. राय हैं। पिता-पुत्र में सुभाषबाबू को लेकर वैचारिक मत-भिन्नता है। डॉ. राय जब सुभाषबाबू पर ऊँगली उठाते हैं तब वह उन पर टूट पड़ता है। स्पष्ट है कि सुभाषबाबू के विचारों का समर्थन करनेवाला है। शांतनु मेहनती है। इसलिए पूरे लगन के साथ पढ़ाई कर डाक्टर बनता है। किशोरबाबू उसे मिलने उनके घर जाते हैं और उसे पूछते हैं - 'प्रैक्टिस कर रहे हो अब भी? कहाँ थे इतने साल? कलकत्ते में कब से रहने लगे' तब उन प्रश्नों का जवाब देते समय उसके मेहनती स्वभाव तथा उसके परिवार के बारे में पता चलता है। स्वयं शांतनु के शब्दों में - ''अरे बाबा। एक साथ ही सब जान लोगे? अच्छा सुनो, मैं एक रात एन.जी.ओ. (नॉन गवर्मेंट आरगनाइजेशन - गैर सरकारी सेवा संस्थान) चलाता हूँ। डॉक्टरी पास करने के बाद मैंने आदिवासियों के बीच चालीस साल काम किया। अब मैं पिछले पाँच सालों से कलकत्ता रहने लग गया हूँ। 'आई लिव अलोन'। दोनों बेटे विलायत में हैं। एक डॉक्टर है मेरी तरह, और छोटा स्विटजरलैंड से एम.बी.ए. कर रहा है।''[2] शांतनु का यह कथन अपने परिवार संबंधित जानकारी तो देता है ही साथ ही मेहनती स्वभाव का भी परिचय देता है।

शांतनु अंधश्रद्धा का विरोध करता है और भूत-प्रेत आदि बातों पर विश्वास नहीं करता। जब किशोरबाबू भूत-प्रेत, हनुमान, फकीर आदि बातों पर विश्वास करने लगते

---

1. अलका सरावगी - कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 103
2. वही, पृष्ठ - 188

हैं तब शांतनु उसे अंधविश्वास से मुक्त होने के लिए कहता है - ''क्या कह रहे हो तुम, किशोर हजारों साल की इस गहरी नींद से अब तो उठो। हिंदूस्तान की महाजाति के अब जागने का समय है। दोस्त - भूत-प्रेत, हनुमान-पीर-फकीर आदि सब बातें अब छोड़ दो। इन्होंने हमें बहुत धोखा दिया है। अब हमें सबसे मुक्त होना है।''[1] शांतनु के इस कथन से ज्ञात होता है कि वह अंधश्रद्धा के खिलाफ है।

शांतनु लालची है। वह समाजसेवा के नाम पर अकूत धन कमाता है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद मोहभंग की स्थिति पैदा हो गई और परिवर्तन हुआ। उसका कारण केवल पीढ़ी का अंतर नहीं है बल्कि मूल्यों का अंतर भी है। इसका प्रमाण प्रस्तुत उपन्यास का शांतनु है जो सुभाषबाबू का समर्थक है। क्रांतिकारी शांतनु अपने पुराने मूल्यों को भूलकर एन.जी.ओ. संस्था चला रहा है। एन.जी.ओ. के माध्यम से वह खूब धन कमाकर ऐशो-आराम की जिंदगी जीता है। वह आदिवासी सेवा के नाम पर अकूत संपत्ति कमाकर पूँजीपति बन जाता है। डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी के शब्दों में - ''वही शांतनु, जो देशविरोधी तरीके से अंग्रेजों की योजनाओं द्वारा कमाई अपनी पैतृक संपत्ति को त्यागने के लिए तत्पर था, अब एन.जी.ओ. के माध्यम से आदिवासी विकास के नाम पर अकूत विदेशी संपत्ति कमाकर अफसरी रोब दाब वाला कैपिटलिस्ट बन गया है।''[2] कहना सही होगा कि शांतनु आदिवासी सेवा के नाम पर कैपिटलिस्ट बन गया है।

सारांश रूप में कहा जाता है कि शांतनु सुभाषबाबू के विचारों से प्रभावित किंतु लालची पात्र है जो पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। फिर भी वह एक मेहनती इन्सान है जो अंधविश्वासों का विरोध करता है।

4.1.3 अन्य पात्र -

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास में प्रधान पात्र, गौण पात्र के अलावा अन्य पात्र भी आए हैं जो उपन्यास में नाममात्र आकर भी विषयवस्तु के विकास को गति देते हैं। मुख्य पात्र के सहायक के रूप में कार्य करते हैं। ये पात्र बीच-बीच में आकर लुप्त हो जाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में गौण पात्र के नाम निम्नांकित है - किशोरबाबू की माँ कुंती, भाई ललित, विवेकानंद विचारों से प्रभावित मित्र सच्चिदानंद, पत्नी, बेटी, भाभी, मामा, मामी, नानी,

---

1. अलका सरावगी -कलि-कथा : वाया बाइपास, पृष्ठ - 75
2. डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी - हिंदी उपन्यास : समकालीन विमर्श, पृष्ठ - 147

परदादा रामविलास, रामविलास का बेटा केदार, रामविलास की विधवा बहन चुनियां, उनका दोस्त बसंतलाल, अंग्रेज अधिकारी जॉन हैमिल्टन, उनका बेटा किशोर का चचेरा भाई बनवारी, बनवारी का बेटा सुमित, शांतनु के पिता डॉ. रॉय, अमोलक के पिता रामरिख पोद्दार, अमोलक के चाचा स्वामी रामानंद कृष्ण उर्फ जोगेश्वर चक्रवर्ति, गांधी का पक्का भक्त सोहन मुंधड़ा, जोगेश्वर की प्रेमिका कादंबिनी, किशोर का बेटा, बहु आदि। ये वे पात्र हैं जो कथावस्तु में बीच-बीच में आकर अपनी पहचान बनाकर लुप्त होते हैं। सभी पात्र उपन्यास की कलात्मकता सिद्ध करने में कामयाब रहे हैं ।

4.1.4 **पात्रों की संख्या में कलात्मकता -**

प्रस्तुत उपन्यास में लगभग नब्बे पात्र हैं। संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो पात्रों की भरमार है। लेकिन संपूर्ण उपन्यास का ढांचा कुछ ही पात्रों के कंधों पर है। अत: संख्या की भरमार होते हुए भी विशिष्ट पात्रों पर ही बल दिए जाने के कारण चरित्र सृष्टि में कलात्मकता दिखाई देती है।

4.1.5 **पात्रों के चयन में कलात्मकता -**

पात्रों का चयन भी कलात्मकता से किया गया है। इसलिए इसमें वैविध्य नजर आता है। उन्होंने प्रस्तुत उपन्यास में विविध वर्गों के पात्रों का चयन किया है। उपन्यास के पात्रों में उच्चवर्ग, व्यापारी, सेठ साहूकार, व्यावसायिक, नौकरीपेशा, राजनीतिक नेता, पंडे-पुजारी, विधवा नारियां, मील-मालिक, गांधीवादी, विवेकानंदवादी और हिंदूवादी आदि सभी प्रकार के पात्रों का चयन दिखाई देता है। इसमें वैविध्यता उम्र को लेकर है, वर्ग को लेकर है, शहरी या ग्रामीण पात्रों को लेकर है, शिक्षित-अशिक्षित पात्रों को लेकर है, नारी तथा पुरूष पात्र को लेकर भी है। विवेच्य उपन्यासों में विशिष्ट समाज के पात्र भी हैं जो विशिष्ट समाज के होते हुए भी प्रातिनिधिक हैं। जैसे - किशोरबाबू, जगतसेठ, अमीरचंद तथा रामविलास आदि। कहना सही होगा कि लेखिका ने पात्रों का चयन भी कलात्मकता से किया है।

4.1.6 **चरित्र-चित्रण में कलात्मकता -**

इस उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण कलात्मक है। इनमें नारी पात्रों को

प्रसंग और देशकाल वातावरण के अनुसार चित्रित किया है। पूरे उपन्यास में नारी मौन है। इसका नायक भारतीय पुरूष प्रधान, पुरूषी मानसिकता तथा प्रतिनिधि पात्र बनकर पाठकों के सामने आता है। किशोरबाबू भारतीय परिवार के घर-घर का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रतीत होते हैं। उसके चित्रण में कलात्मकता इस बात को लेकर है कि उसके जीवन की विविध अवस्थाएँ इसमें प्रस्तुत हैं। चरित्रों का चित्रण प्रतीकात्मक है। अमोलक की प्रतीकात्मकता बताते समय डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी लिखते हैं - ''कलि-कथा ... में गांधी के प्रतीक पात्र अमोलक को जिंदा रखना एक तरफ इन भौतिक व नवउपनिवेशवादी मूल्यों की अवहेलना व तिरस्कार का संकेतपूर्ण निदर्शन करता है, तो दूसरी तरफ आजाद भारत में होते सब कुछ की पोल खोलते हुए अमोलक के प्रति रवैये में गांधीवाद के प्रति भी देश के संचालकों की नीयत व व्यवहार की बेरूखी अवमानना खुब खुल सकती है, जो बड़ी मर्मभेदी बनाकर प्रस्तुत हुई है। अमोलक की हत्या बाबरी मस्जिद कांड में होती है। क्या इस खास प्रासंगिकता के लिए इरादतन तो लेखिका ने अमोलक को जिन्दा नहीं रखा। ... औपन्यासिक प्रतीकात्मक यहाँ भी खत्म नहीं होती। किशोर के अंदर अमोलक की आत्मा के रूप में गांधीवाद फिर से जी उठता है। एक ओर अद्भुत सार्थक प्रयोग।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि अमोलक के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने उपन्यास को कलात्मकता प्रदान की है। शांतनु भी सुभाषबाबू का प्रतीक पात्र है। जो क्रांतिकारी था लेकिन वह समाज सेवा के नाम पर धन कमाकर पूँजीपति बन गया है। कहना सही होगा कि लेखिका चरित्र-चित्रण में कलात्मकता लाने में सफल हुई है।

निष्कर्षत: कहना होगा कि उपन्यास का नायक किशोरबाबू है, जो मातृप्रेमी और मित्रप्रेमी नजर आता है। नेतृत्व संपन्नता, भविष्य के प्रति सजगता, मेहनती, स्वाभिमानी, देशप्रेमी, जिज्ञासु, जिद्दी, डरपोक, दिल का मरीज तथा दकियानुसी मानसिकता उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं। गौण पात्रों में अमोलक तथा शांतनु - सुभाषबाबू का समर्थक, मेहनती, अंधश्रद्धा का विरोधी, लालची तथा पूँजीपति है। अन्य पात्र अपनी-अपनी विचारधारा को लेकर प्रकट होते हैं जो उपन्यास में कलात्मकता प्रदान करते हैं। पात्र संख्या की दृष्टि से पात्रों की भरमार होने पर भी कुछ पात्रों के माध्यम से कलात्मकता सिद्ध हुई है। पात्रों के चयन में वैविध्य नजर आता है। हर वर्ग के पात्र उपन्यास में मौजूद है। चरित्र-चित्रण में किशोरबाबू

---

1. डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी - हिंदी उपन्यास : समकालीन विमर्श, पृष्ठ - 147

भारतीय पुरूष प्रधान मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है। शांतनु और अमोलक प्रतीक पात्र हैं। कहना आवश्यक नहीं कि पात्रों के पूरे चरित्र-चित्रण में कलात्मकता दिखाई देती है जिसका चित्रण वर्ग, स्थिति, समय और परिवेश की समग्रता के आधार पर किया है।

4.2 शेष कादम्बरी :

'शेष कादम्बरी' उपन्यास में भी पात्रों की चरित्र-सृष्टि का चित्रण कलात्मक रूप में मिलता है। उनका विवेचन-विश्लेषण निम्नांकित है -

4.2.1 प्रधान पात्र -

4.2.1.1 रूबी दी :-

'रूबी दी' उपन्यास की प्रमुख पात्र है। वह कथा की सूत्रधारिणी है, आदि से अंत तक उसकी करूण गाथा उपन्यास में प्रस्तुत है। देविदत्त मामा ने अपने असफल प्रेम की याद को जिंदा रखने के लिए उनका नाम 'रूबी दी' रखा है। उनके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

4.2.1.1-1 उपन्यास की नायिका

रूबी दी उपन्यास की नायिका है। उपन्यास का नाम कादम्बरी के अनुसार क्यों न हो लेकिन उपन्यास में आदि से अंत तक रूबी दी की कथा है। डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी के शब्दों में - "नायिका रूबी दी ही कथा की विषय भी है और माध्यम भी।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट है कि कथा के केंद्र में नायिका के रूप में रूबी दी है।

4.2.1.1-2 समाज सेविका

रूबी दी 'परामर्श' संस्था द्वारा समाज की सेवा करती है। वह इस संस्था के अंतर्गत दुखियारी जमाने की नारी और बेचारी औरतों की सेवा करती है। उपन्यास के आरंभ में रूबी दी सोचती है - "छब्बीस सालों से तरह-तरह की दुखियारी जमाने की नारी, बेचारी औरतों के लिए यह संस्था 'परामर्श' चलाकर जिसे चलाते-चलाते वे खुद अपने लिए तक

---

1. सं. गिरधर राठी - समकालीन भारतीय साहित्य, द्वैमासिक, मार्च-अप्रैल, 2002, पृष्ठ - 186

रूबी गुप्ता से रूबी दी बन गई थी।"[1] उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रूबी दी 'परामर्श' संस्था के द्वारा समाज की सेवा करती है। प्रियंकर पालिवाल उनके बारे में ठीक ही कहते हैं - "अपनी संस्था परामर्श के माध्यम से समाजसेवा और देशोद्धार को निकली रूबी दी दरअसल अपने जीवन को कुछ अर्थ देने की जद्दोजहद से गुजर रही है।"[2] कहना आवश्यक नहीं कि रूबी दी समाज की सेवा करनेवाली भारतीय सेवाभावी नारी है।

4.2.1.1-3 जिद्दी

प्रस्तुत उपन्यास में रूबी दी के जिद्दी स्वभाव का भी परिचय मिलता है। एक रात उसकी माँ उसे थप्पड़ मारकर भूखा सुलाती है, उसका कारण उसकी जिद ही है। जब रात में उसकी नींद उचट जाती है तब मामा-मामी और माँ के बीच जोर-जोर से बहस चल रही थी। उसके बारे में लेखिका लिखती हैं - "सोने के पहले माँ ने रूबी को किसी बात पर जिद करने के लिए थप्पड़ मारा था और वह बिना खाए रोती-रोती सो गई थी।"[3] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट है कि रूबी दी जिद्दी स्वभाव की है।

4.2.1.1-4 सहनशील

रूबी दी ने बचपन से दु:ख या पीड़ा को भोगा है। वह बचपन, किशोरावस्था तथा शादी के उपरांत भी दु:ख को भोगती रही, सहती रही। जब नामी चिकित्सक डॉ. डेविस ने रूबी दी के बारे में 'सीरियसली इल' कहा तब सुधीर घबड़ा गए थे। वे जानते हैं कि "रूबी ने बहुत-कुछ सहा है। बचपन का हादसा, किशोरावस्था का हादसा और फिर शादी के उपरांत हर पल छोटी-छोटी क्षुद्रताओं के छोटे-छोटे हादसे। कई बार उनके मन में कचोट होती है कि ऐसी पत्नी के लिए वे कुछ भी नहीं कर पाए। पर जीवन ऐसा ही है। हर आदमी अपने हिस्से के दु:ख अपने तरीके से सहता है। कोई चारा नहीं वे कुछ नहीं कर सकते रूबी के लिए। पर दूसरी बेटी के जन्म के बाद रूबी में कुछ गहरा परिवर्तन देख रहे हैं। पहले तो उन्होंने सोचा कि बेटा न होने का दु:ख है, घर में बाहर में लोग कुछ-न-कुछ कह डालते हैं इस बारे में।"[4] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि रूबी दी अपने जीवन में दु:ख, पीड़ा और दर्द को भोगती रही है।

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 6
2. सं. विनोद दास, वागर्थ, जुलाई 2004, पृष्ठ - 110
3. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 28
4. वही, पृष्ठ - 89

4.2.1.1-5 प्रतिभाशाली

रूबी दी प्रतिभाशाली नारी है। वह प्रतिभा के बूते पर अंग्रेजी साहित्य में कलकत्ता विश्वविद्यालय से गोल्ड मेडलिस्ट है। कादंबरी के कहने पर वह कविता तथा कहानी लिखती है। रूबी दी की प्रतिभा के संदर्भ में लेखिका लिखती हैं - "रूबी को पहली बार पता चला कि उसमें जन्मजात प्रतिभा है कि वह दूसरों के कष्ट को भाँप ले, उन्हें समझ सके और उन्हें शांति, सांत्वना और सम्बल दे सके।"[1] स्पष्ट है कि रूबी दी प्रतिभाशाली है।

4.2.1.1-6 जिज्ञासु -

रूबी दी जिज्ञासु नारी है। उनके मकान में नीचेवाला एक कमरा हमेशा बंद रहता। इसका कारण वह पिताजी से पूछती है लेकिन पिताजी उसे कमरे की चाबी खो गई है कहकर बात को टाल देते हैं। तब रूबी दी की जिज्ञासा और भी बढ़ती है। वह मिस्टर वियोना से पूछती है - "अच्छा, बस एक बात और, मिस्टर वियोना। वह नीचेवाला एक कमरा किसलिए बंद है। इस मकान में उसकी चाबी कहाँ खो गई है?"[2] इस कथन से रूबी की जिज्ञासु वृत्ति का परिचय मिलता है।

4.2.1.1-7 अकेली

अकेलेपन की समस्या मनुष्य-जीवन को सूना-सूना बना देती है। ये समस्या रूबी को बचपन से ही सताती रही है। जब सविता के पापा और उनकी दूसरी पत्नी के साथ संबंध ठीक नहीं थे, तब वे रहने के लिए ऐसे घर की तलाश में थे जहाँ अकेली औरत रहती हो। उनके बारे में रूबी सोचती है कि शायद सविता के पापा तीसरी बीबी की तलाश में है। उसी समय रूबी दी को जीवन का सूनापन महसूस होता है। तब वह अपने अकेलेपन के बारे में सोचती है - "अकेली तो यह लड़की खुद भी है, पर ढलती उम्र का अकेलापन शायद यह नहीं समझ सकती। रूबी गुप्ता से ज्यादा अकेलेपन को किसने इतने लम्बे संग-साथ में जाना है - दुनिया और अपने होने की समझ के साथ-साथ उपजा ठेठ अकेलापन। और तो और क्या सचमुच पति के रहते भी अकेलापन नही था?"[3] कहना आवश्यक नहीं कि रूबी दी अपने जीवन में अकेलेपन की समस्या से ग्रस्त थी, जिसके कारण उसे अपना जीवन सूना जान पड़ता है।

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 105
2. वही, पृष्ठ - 49
3. वही, पृष्ठ - 17

4.2.1.1-8 प्रेमिका

रूबी दी एक प्रेमिका भी है, वह अदिल से प्रेम करती है। जब उन्नीस सौ पैंसठ में भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ, तब अदिल और उसमें (रूबी) टूटन आ जाती है। लेकिन जब बाबरी मस्जिद गिरने पर कलकत्ता शहर में दंगे-फसाद होने पर कर्फ्यू लग जाता है तब तिरसठ साल में भी उन्हें अदिल की याद जिंदा रहने का यकीन दिलाती है - "रूबी दी के साथ सतरह साल की उम्र से घटित होनेवाली विचित्र घटना यह थी कि हर बार ऐसे मौको पर उनके अन्तर्वस्त्र-अन्दर पहनने के कपड़े - सूखने बन्द हो जाते थे। वे धोए जाते और मकान के पिछवाड़े में दिन-रात घंटो सूखने के बावजूद उतने-के-उतने गीले पड़े रहते।"[1] स्पष्ट है कि अंदर के कपड़े सूखते नहीं, इसका मतलब रूबी दी के हृदय में अभी भी अदिल की यादें हैं। अंदर के कपड़े न सूखने का प्रतीक अदिल की छाया अंतर्मन से न जाना है। इतना ही नहीं वह अपने पति और बच्चों से ज्यादा नि:स्वार्थ प्रेम को मानती है। डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी के शब्दों में "हम जब तक अपनों के अलावा किसी से प्रेम नहीं करते, तब तक प्रेम का अर्थ नहीं जान सकते... अपने पति-बच्चों से हम कर्तव्य से बंधे होते हैं। उनके लिए कुछ करके वह संतोष नहीं मिल सकता, जो सिर्फ नि:स्वार्थ प्रेम ही दे सकता है।"[2] उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रूबी दी नि:स्वार्थ प्रेम करनेवाली प्रेमिका है।

4.2.1.1-9 उदार

रूबी दी में उदारता का गुण भी दिखाई देता है। रूबी दी 'परामर्श' संस्था में आयी स्त्रियों को परामर्श देने का काम करती है जिससे उसकी उदारता का परिचय मिलता है। उपन्यास के अंत में रूबी दी लिखती हैं - "सायरा को कुल पच्चीस हजार रूपए देने के बाद पिछली वसीयत की तरह मेरी चल-अचल सम्पत्ति की एकमात्र वारिस मेरी नातिन कादम्बरी ही है। पर मैं कादम्बरी से यह प्रार्थना करती हूँ कि वह सविता को आत्मनिर्भर जिंदगी जी पाने के लिए खुद को मिलनेवाले नकद रूपयों में से पच्चीस प्रतिशत रूपए दें।"[3]

इससे स्पष्ट होता है कि रूबी दी अपनी उदारता के कारण ही अपनी संपत्ति मृत्यु के पूर्व विभाजित करती है। डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी रूबी दी की उदारता के बारे में लिखते

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 194
2. सं. गिरधर राठी - समकालीन भारतीय साहित्य, द्वैमासिक, मार्च-अप्रैल 2002, पृष्ठ - 188
3. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 199

हैं - ''अपनों के अलावा किसी को अपनाने व अकेलेपन में मनुष्य की चाहता की स्वानुभूति के परिणाम स्वरूप सविता को अपनी संपत्ति के थोडे हिस्से की वारिस बनाना एक और व्यावहारिक व मानवीय प्रतिफलन है।''[1] इस विचार से रूबी दी की उदारता के साथ मानवीय भावना दिखाई देती है।

निष्कर्ष रूप में कहना समीचीन होगा कि रूबी दी उपन्यास की नायिका, समाज सेविका, जिद्दी, सहनशील, प्रतिभाशाली, जिज्ञासु, अकेलेपन को सहनेवाली उदार मन की प्रेमिका है।

4.2.2 **गौण पात्र -**

4.2.2.1 **सविता :-**

उपन्यास में नायिका रूबी दी के बाद महत्त्वपूर्ण पात्र है - सविता। जो दुबली-पतली और सांवले रंग की लड़की है। वह अपने लंबे रेशमी बाल खुले रखती थी। उनका तौर-तरीका और बातचीत करने का ढ़ंग अच्छा है। उसे भाई, पिताजी, माँ, पति और सास आदि सभी ने छोड़ दिया है। रूबी दी इस संबंध में सोचती है - ''जिसका चेहरा यदि बहुत आकर्षक नहीं था, तो कहीं से भद्दा भी नहीं था। अपने लंबे रेशमी बाल जब वह खुले रखती थी, तो काफी अच्छी लगती थी। उसके नाक-नक्श - आँखें -होंठ सब एक संगति में थे। कहीं कुछ जरूरत से ज्यादा बड़ा या छोटा नहीं था। उसके तौर तरीके, बातचीत करने का ढंग - सब कुछ सही था, बल्कि उसे तमीजदार और परिष्कृत ही कहा जा सकता था। कुल मिलाकर वह औसतन अच्छी लड़की दिखती थी। कहाँ क्या कमी है इस लड़की में जो सबने इसको इस तरह छोड़ दिया है।''[2]

सविता की माँ नहीं है अर्थात् वह मातृहीन है। वह जब कॉलेज पढ़ती थी तब उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। तब छह महीने बाद उसके भाई की शादी हो जाती है। उस समय सविता की उम्र बीस साल की थी। उसके पिताजी चरित्रहीन आदमी हैं। साथ ही वे दूसरी शादी कर एक नए घर की तलाश में हैं। उन्हें एक ऐसा घर चाहिए जहाँ अकेली औरत

---

1. सं. गिरधर राठी - समकालीन भारतीय साहित्य, द्वैमासिक, मार्च-अप्रैल 2002, पृष्ठ - 188
2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 165

रहती हो । इस विचार से रूबी दी कहती है - "तुम्हारे पापा क्या अपने लिए कोई तीसरी बीवी खोजने में लगे हैं?"[1] इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सविता के पिताजी चरित्रहीन आदमी है और अपने बेटी की ओर उनका ध्यान नहीं है।

एक दिन रूबी दी के नौकर की पत्नी श्यामा, सविता को अधजली रोटी खाने को देती है। यह बात रूबी दी को पता चलती है तब वह श्यामा को डाँटती है तो श्यामा अपनी सफाई देते हुए कहती है - "तो मेहमान को कहिए कि मेहमान की तरह रहे। हम आपकी नौकरी कर रहे हैं, इस छोकरी की नहीं। तेवर तो देखिए उनके। जब देखो हुकुम चलाती है। बात करने का ढ़ंग तक नहीं। कोई उसके जर खरीद? गुलाम नहीं है हम लोग।"[2] श्यामा के इस कथन से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि सविता दूसरों पर रोब जमानेवाली नारी है। वह एक तरफ सीधी-सादी और शांत स्वभाव की दिखाई देती है तो दूसरी तरफ नौकरों पर रोब जमानेवाली है। इसी संदर्भ में सविता अपने तकदीर को कोसती हुई रूबी दी से कहती है - "मेरी तकदीर ही ऐसी है रूबी दी। मैं जहाँ भी रहती हूँ हमेशा कोई-न-कोई ऐसा जरूर वहाँ रहता है, जिसे मेरा सास लेना भी अख़रता है।"[3] इससे पता चलता है सविता ने अपने जीवन में हमेशा दु:ख तथा पीड़ा को भोगा है। वह आगे अपनी कहानी रूबी दी से बताती है - पिताजी ने भैया की शादी कर दी और वे दूसरी पत्नी के घर रहने चले गए। मैं भैया के पास ही रही। भैया की पत्नी दस बजे उठती थी, होटल से खाना मँगवाती, खाती, पिती और मेरे खिलाफ भैया को भड़काती, तब भैया मुझे मारने लगते। मैंने एक दिन चिढ़कर भैया को धमकाने के लिए, जान लेने की बात की तो भैया ने मेरे खिलाफ पुलिस में डायरी लिखवा दी। शादी के बाद पति के साथ दिल्ली गई। लेकिन पति का प्यार नहीं मिला। वह रातभर वेश्याओं के साथ ही रहते थे। मेरे ससुराल जाने पर सास ने नौकरों से लड़-झगड़कर घर से निकाल दिया। सारा काम मुझे करना पड़ता था। जब दिन भर के काम के कारण मैं बीमार पड़ गई तब उन लोगों ने मेरी 'एडस्' की 'टेस्टिंग' भी कराई। डॉक्टर ने मुझे आराम करने के लिए कहने पर उन्होंने मुझे कलकत्ता भिजवाया तब मैं पापा के पास रहने गई। वहाँ सौतेली माँ ने मुझे किसी चीज को छूने नहीं दिया। वह जब भी खाना बनाती तभी सब खाते, नहीं तो सभी भूखे रह जाते। रात को सौतेली माँ न जाने मेरे बारे में पिताजी को क्या-क्या बताती। परिणामत: एक

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 11
2. वही, पृष्ठ - 182
3. वही, पृष्ठ - 183

दिन पिताजी ने मुझे मारकर मेरा सामान घर के बाहर फेंक डाला। फिर मैं मिसेज सूद के पास आकर रहने लगी। वहाँ पर भी पुरानी दाई मुझ पर चिढ़ती और मेरे बारे में ऊट-पटांग बाते मिसेज सूद को बताती। फलत: मिसेज सूद ने भी मेरा सामान बाहर फेंकने की धमकी देती थी। कहना आवश्यक नहीं कि सविता अपने जीवन में कष्ट सहती आई है, पीड़ा तथा दर्द को भुगती रही है। इसी कारण रूबी दी कष्ट में पीसती हुई सविता को करीब का रिश्तेदार मानती है। जितना की दुनियाँ में शायद कोई किसी का नहीं होता। रूबी दी सविता का भला करना चाहती है अर्थात् वह उसकी दूसरी शादी करना चाहती है। इसी कारण वह समाचार पत्र में आए हुए विज्ञापन देखती है लेकिन सविता इस संबंध का अनुभव बताती है कि विज्ञापन झूठे होते हैं। वह कहती है कि इसी विज्ञापन की वजह से ही मेरे ऊपर शादी-शुदा और तलाक-शुदा औरत के लेबल लगे हैं।

सविता संस्कार और विचारों के दूवंदूव में जीनेवाली नारी है। साथ ही अपने न्याय प्राप्ति के लिए संघर्ष करनेवाली है। वह अपने पति पर बीस लाख रूपयों का दावा रखती है। वह अपने पति से बदला लेना चाहती है। वह अन्याय को नहीं सहती। डॉ. शशिकला त्रिपाठी के शब्दों में - ''सविता संस्कार और विचारों की दूवंदूवात्मकता में जीती तो है, परंतु नारी अधिकार छोड़ने को तैयार नहीं है। सविता उन स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जो न्याय प्राप्ति के लिए संघर्षशील होती है। सहकर अन्याय को बढ़ावा नहीं देती।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि सविता अपने हक के लिए संघर्ष करनेवाली नारी है।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि सविता उपन्यास में प्रारंभ से अंत तक रूबी दी के समानांतर स्त्री के रूप में उपस्थित है। साथ ही वह पिता, भाई और पति दूवारा प्रवंचित है। शादीशुदा होते हुए भी तलाकशुदा भी है। सविता उन भारतीय स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जो अन्याय का विरोध कर न्याय प्राप्ति के लिए संघर्षशील है।

4.2.2.2 **कादम्बरी :-**

प्रस्तुत उपन्यास की 'कादम्बरी' रूबी दी की नातिन है। उसके माता-पिता विदेश में रहते हैं। वह दिल्ली में बिना शादी किए एक फ्रेंच-कट दाढ़ीवाले पत्रकार गौतम के

---

1. डॉ. शशिकला त्रिपाठी - उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री, पृष्ठ - 116

साथ रहती है। कादम्बरी लेखन कार्य में जुड़ी हुई लड़की है। वह पत्र तथा रिपोर्ट लिखती है। वह दिल्ली से अपनी नानी रूबी दी को बार-बार फोन कर उसकी तबीयत की पूछताछ करती रहती है और अपनी नानी की कविता तथा कहानी लिखने के लिए प्रेरणा भी देती है। और खुद भी लिखती है। वह सुखाग्रस्त इलाके में जाकर 'मेरा भारत महान' विषय पर रिपोर्ट लिखती है। साथ ही देवीदत्त मामा के जीवन पर 'एक अदृश्य आदमी' तथा 'एक शताब्दी की खोज : वाया एक अदूद आदमी' नाम से रिपोर्ट भी लिखती है और अपनी नानी को कुरियर से भेजती है। कादम्बरी की माँ कलकत्ते की है तो पिता आधे अँग्रेज और आधे भारतीय अर्थात् अँग्लो इंडियन है। जिसके कारण दिखने में वह न हिंदूस्थानी लगती हैं और न भारतीय। कादम्बरी के मन में गौतम के प्रति आदर है। कादम्बरी घुमक्कड़ भी है। वह केनिया, युगांडा, साउथ अफ्रीका और तांजानिया आदि देशों की सैर कर आई है।

कादम्बरी संवेदनशील, चिंतनशील तथा पीड़ा या दर्द को सहनेवाली लड़की है। इस बात को लेकर रूबी दी सोचती है - ''हर शब्द पर उन्हें एक गहरी पीड़ा का अनुभव हो रहा था। इतनी संवेदनशील लड़की है पता नहीं क्या-क्या सोचती है, क्या-क्या सहती है।''[1] रूबी दी के कथन से कादम्बरी के संवेदनशीलता तथा सहनशीलता का पता चलता है। कादम्बरी रूबी दी से बहुत प्यार करती है और उनके जैसे बनने की चाह रखती है। इस संदर्भ में प्रियंकर पालिवाल का कथन द्रष्टव्य है - ''रूबी दी को बहुत प्यार करनेवाली नातिन कादम्बरी ने रूबी दी के अहंकार के इस नाद को सुना था।''[2] अंत में रूबी दी अपनी विश्वास पात्र नातिन को अपने चल-अचल संपत्ति का वारिस मानती है। वह अपने वसियत नामे में लिखती हैं - ''मेरी चल-अचल संपत्ति की एकमात्र वारिस मेरी नातिन कादम्बरी ही है।''[3]

संक्षेप में कहना सही होगा कि कादम्बरी समझदार, संवेदनशील, प्रतिभासंपन्न, अपनी नानी से प्यार करनेवाली, घुमक्कड़, चिंतनशील, विश्वासू एवं दूसरों के प्रति आदर रखनेवाली लड़की है।

4.2.3 अन्य पात्र -

उपन्यास में चित्रित प्रधान पात्र या गौण पात्र छोड़कर जो पात्र होते वे अन्य पात्र कहलाए जाते हैं। ये पात्र प्रधान पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं। साथ ही ये पात्र कथा-

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 52
2. सं. विनोद दास - वागर्थ, जुलाई, 2002, पृष्ठ - 110
3. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृष्ठ - 199

वस्तु में बीच-बीच में आकर अपनी जगह बनाकर तथा प्रभाव छोड़कर बीच में ही लुप्त हो जाते हैं। अन्य पात्र अपनी प्रमुख प्रवृत्ति के कारण प्रधान पात्र तथा गौण पात्र के चरित्रों को दुर्बल तथा सबल बनाने की कोशिश करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में अन्य पात्रों की भरमार नजर आती है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित गौण पात्र निम्नांकित है - रूबी दी का पति सुधीर, उसकी माँ, भाभी, पिताजी, उनके मित्र बोथरा, सविता का पति, उसका बड़ा भाई, उसके पिताजी, उसकी सास, रूबी दी की बेटी गौरी, इतिहास के जानकार मिस्टर वियोना, मनोरंजन व्यापारी, आभा जैन, रूबी दी का बचपन का प्रेमी अदिल, रिटायर्ड स्कूल मास्टर, उनकी बेटी माया बोस, देवीदत्त मामा, वासुदेव मणि, सायरा, फरहा, कल्याणी हलदार, मनोचिकित्सक देवीदत्त, रूबी दी और नौकरानी श्यामा आदि। उपर्युक्त कुछ पात्र विविध क्षेत्र तथा व्यवस्था से जुड़े रहकर अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व कर उपन्यास को कलात्मक ढ़ंग से सजाने का कार्य किया है। संक्षेप में अन्य पात्र, प्रधान पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालकर समाज की यथार्थता को उजागर करते हैं।

4.2.4 पात्रों की संख्या की दृष्टि से कलात्मकता -

पात्रों की संख्या की दृष्टि से 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में पात्रों की भरमार दिखाई देती है। प्रस्तुत उपन्यास में लगभग 140 पात्र हैं। इन पात्रों का कही-न-कही छोटे-छोटे प्रसंगों तथा घटनाओं में उल्लेख मिलता है। पात्रों की भरमार होते हुए भी उपन्यास का बुनियादी ढाँचा रूबी दी, सविता, कादम्बरी, माया बोस तथा आभा जैन आदि नारी पात्रों पर निर्भर है। अत: संख्या की दृष्टि से भीड़ होते हुए भी कुछ पात्रों पर बल दिए जाने के कारण उपन्यास की कलात्मकता बनी रही है।

4.2.5 पात्रों के चयन में कलात्मकता -

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों का चयन कलात्मकता से किया है। उपन्यास के पात्र चयन में विविधता दृष्टिगोचर होती है। लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में पुरूष पात्रों के बजाय ज्यादा तर नारी पात्रों को चुना है। ये नारी-पात्र हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए नजर आते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के पात्र में उच्चवर्ग की नारियाँ, मध्यवर्ग की नारियाँ तथा निम्नवर्ग की नारियाँ,

जोतिष-पंडित, जादू-टोना, जंतर-मंतर करनेवाले, कुछ पात्र व्यापारी, पत्रकार, कुछ पात्र ऐतिहासिक, सुशिक्षित - अशिक्षित, डॉक्टर, नेतागण और वेश्या आदि सब प्रकार के पात्रों का चयन किया हुआ दृष्टिगत होता है। इन पात्रों के चयन में वैविध्य नजर आता है। यह वैविध्य धन को लेकर है, उम्र को लेकर है, नारी तथा पुरूष पात्र को लेकर है। शिक्षित-अशिक्षित पात्र को लेकर है। ज्यादातर नारी पात्रों का चयन महानगरों में होनेवाली नारियों का है। ये नारी पात्र हर वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं, जैसे सविता, रूबी दी, कादम्बरी, माया बोस तथा आभा जैन आदि। अत: पात्रों के चयन की यह विविधता पात्रों के आचार-विचार, उनकी रूचि, तन्मयता, अनुभूति तथा गहनता आदि को स्पष्ट करती है। अंत में कहना सही होगा कि लेखिका ने पात्रों का चयन भी कलात्मकता से किया है।

4.2.6 **चरित्र-चित्रण में कलात्मकता -**

'शेष कादम्बरी' उपन्यास में पात्रों का चित्रण वर्ग, स्थिति, समय और परिवेश की समग्रता को ध्यान में लेकर किया है। उपन्यास में ज्यादातर नारी पात्रों का चित्रण मिलता है। उपन्यास का बुनियादी ढाँचा ही नारी पात्रों पर ही निर्भर है। उपन्यास की नायिका अपने जीवन में दु:ख, पीड़ा तथा कुंठा से ग्रस्त जीवन जिती है और स्त्री-मुक्ति की माँग करती है। बीस साल की उम्र में आत्महत्या करनेवाली आभा जैन की बेटी पुरूष वर्चस्व समाज की विसंगतियों का संकेत देती है। रंडी की मंडी बिकनेवाली माया बोस अपने पिता दूवारा ही विषकन्या हो गई है। सीधी-सादी लड़की पर जबरन करने के कारण आज के नवयुवतियों को वेश्या बनकर जीवन जीना पड़ता है उसका सशक्त उदाहरण माया बोस है। जीवनभर पीड़ा तथा कष्ट भोगनेवाली सविता अपने अधिकार के लिए लड़नेवाली नारी है। कादम्बरी और देवीदत्त मामा का उपयोग कर लेखिका ने स्वतंत्रता आंदोलन का चित्रण कर गांधीवाद तथा मार्क्सवाद पर विचार-चिंतन किया है।

उपन्यास में चित्रित नारियाँ भारत के घर-घर का प्रतिनिधित्व करती हुई प्रतीत होती है। उनके चित्रण में कलात्मकता इस बात को लेकर है कि ये नारियाँ अपने अधिकार की माँग करती हैं, मुक्ति की माँग करती है। उपन्यास की नायिका रूबी दी भयावह अकेलेपन से

दूर भागकर आत्महत्या करना चाहती है लेकिन वह 'गुड फ्रेंडस् सोसाइटी', 'वामा स्टडी ग्रुप' और 'परामर्श' की संलग्नता के कारण फिर आत्महत्या के विरूद्ध खड़ी होती है। उपन्यास में पुरूष पात्रों का भी चित्रण कलात्मकता से अंकित है। उपन्यास में कादम्बरी प्रतीक पात्र है, जिससे रूबी दी शेष कथा लिखने की अपेक्षा रखती है। अत: कहना सही होगा कि उपन्यास में चित्रित सभी पात्र वर्ग, समय तथा परिवेश के अनुकूल होने के कारण प्रस्तुत उपन्यास के चरित्र-चित्रण में कलात्मक परिलक्षित होता है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में चरित्र सृष्टि का उचित निर्वाह हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका रूबी दी समाज सेविका, सहनशील, प्रतिभाशाली, जिज्ञासु, अकेलापन, प्रेमिका तथा उदारता आदि गुण उनके व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं। सविता अपने जीवन में अनवरत कष्ट को सहनेवाली, पिता, भाई और पति दूवारा प्रवंचित तथा अपने अधिकार के लिए लड़नेवाली नारी है। कादम्बरी समझदार, संवेदनशील, प्रतिभासंपन्न, घुमक्कड़, चिंतनशील तथा दूसरों का आदर कर अपने नानी से प्यार करनेवाली लड़की है। गौण पात्रों में लेखिका ने सविता और कादम्बरी का चित्रण कलात्मकता के साथ अंकित किया है। अन्य पात्र, मुख्य पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं और अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। संख्या की दृष्टि से पात्रों की भरमार होने के बावजूद भी कुछ पात्रों के सहारे उपन्यास को कलात्मक बनाया है। पात्रों का चयन समाज के हर वर्ग से किया है। परंतु ज्यादातर नारी-पात्रों का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है। चरित्र-चित्रण भी कलात्मकता के साथ किया है। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि चरित्र-सृष्टि की दृष्टि से 'शेष कादम्बरी' उपन्यास कलात्मक है इसमें संदेह नहीं।

4.3 कोई बात नहीं :

प्रस्तुत उपन्यास में चरित्रों निर्वाह या विकास अच्छी तरह से हुआ परिलक्षित होता है। अध्ययन की सुविधा के लिए चरित्र सृष्टि को प्रधान पात्र, गौण पात्र तथा अन्य पात्र आदि में विभाजित किया है जिनका जिक्र निम्नांकित है -

4.3.1 प्रधान पात्र -

उपन्यास में आदि से अंत तक मौजूद रहकर जो पात्र समाज में अपनी एक अलग पहचान रखते हैं उन्हें प्रधान पात्र कहा जाता है। अलका सरावगी के 'कोई बात नहीं' उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में 'शशांक' का चित्रण मिलता जो इस प्रकार हैं -

4.3.1.1 शशांक :-

शशांक 'कोई बात नहीं' उपन्यास का नायक है। उनकी उम्र सत्रह साल की है। वह दूसरों की तरह चल या बोल नहीं सकता। कलकत्ते के एक नामी मिशनरी स्कूल में वह पढ़ता है। उसका एक मित्र है जिसका नाम है आर्थर। वे दोनों एक ही स्कूल में साथ-साथ पढ़ते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में शशांक अपाहिज, दूसरों की चिंता करनेवाला, स्वावलंबी बनने की छटपटाहट रखनेवाला, डरपोक, जिज्ञासु, अकेलापन, क्रोधी, जिद्दी तथा मित्र आदि विशेषताओं के साथ प्रस्तुत हुआ है। जिसका विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

4.3.1.1-1 अपाहिज

शशांक सत्रह साल का अपाहिज लड़का है। वह दूसरों की तरह चल तथा बोल नहीं सकता है। वह बोलते समय भी हड़बड़ाता अर्थात् हकलाता है और चलते समय भी गड़बड़ा जाता है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास में शशांक के संबंध में लेखिका लिखती हैं - ''क्या हुआ जतीन दा, आज मन ठीक नहीं है? आदमी को जलते हुए देखकर कैसा-कैसा लगता होगा न? शशांक ने विक्टोरिया के सामने दूवार की ओर कुछ हड़बड़ी में बढ़ते हुए पूछा। उसकी आँखों के सामने हिंदी फिल्मों में देखे जलती चिताओं के आम दृश्य घूम गए थे। हड़बड़ाने से उसकी चाल अक्सर और गड़बड़ा जाती थी। ऐसे मौकों पर कई बार खयाल आता था कि यदि वह पड़ोस के श्रीरूप दास की तरह व्हील-चेयर पर होता या चलने में सहारे के लिए उसके पास दो डंडे या एक छड़ी ही होती, तो दूर से लोग समझ लेते कि उसे चलने में दिक्कत है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि शशांक एक अपाहिज लड़का है।

4.3.1.1-2 दूसरों की चिंता करनेवाला

शशांक दूसरों की चिंता करनेवाला लड़का है। शशांक के मौसी की कहानियाँ कहीं पत्र-पत्रिकाओं में छपती नहीं, प्राय: वापस लौट आती है। शशांक को उस वापस आती

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 11

कहानियों का मौसी क्या करेगी इस बात को लेकर चिंता है। शशांक अपने नौकर रामा की भी चिंता करता है। रामा अपने घर में परेशानी होने से चिड़ता रहता है। तब शशांक अपने दादाजी से कहता है - "दादाजी, हम उसकी 'सलेरी' क्यों नहीं बढ़ा देते?"[1] स्पष्ट है कि शशांक को अपने नौकर रामा की चिंता है।

4.3.1.1-3 स्वावलंबी बनने की छटपटाहट

शशांक अपाहिज होते हुए भी स्वावलंबी बनना चाहता है। वह अपने खुद के काम खुद ही करता है। इसके संदर्भ में शशांक की माँ का यह कथन द्रष्टव्य है - "शशांक अब सारे काम खुद कर सकता है - नहाना - धोना, खाना-पिना, कपड़े पहनना वगैरह - वगैरह। वह दीवारें और फर्निचर पकड़कर इधर से उधर जा सकता है।"[2] शशांक की माँ के उक्त कथन से विदित होता है कि शशांक स्वावलंबी बनने की कोशिश करता है।

4.3.1.1-4 जिद्दी

जिद्द मनुष्य का आंतरिक गुण है जो मनुष्य को अंतिम लक्ष्य तक पहुँचाता है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक शशांक जिद्दी है। एक दिन भयंकर बारिश के कारण उन्हें घर ले जाने के लिए स्कूल की गाड़ी नहीं आती। तब शशांक के मन में घर पहुँचने की होड़ पैदा होती है, वह अपाहिज होते हुए भी पैदल घर आता है। माँ ऊपर से उस पर गुस्सा प्रकट करती है लेकिन अंदर ही अंदर गर्व भरा संतोष भी महसूस करती है। वस्तुत: शशांक अपनी पूरी जिंदगी इसी तरह जीता है। उसका मूल कारण है - उसकी जिद। अत: कहना आवश्यक नहीं कि शशांक जिद्दी है।

4.3.1.1-5 डरपोक

शशांक का एक दुर्बल पक्ष है उसकी डरपोक या घबराने की वृत्ति। वह 'मैथ्स' का पेपर हल करते समय उसके मन में घबराहट पैदा होती है। साथ ही वह पुलिस से भी डरता है। वह दंगे-फसाद, क्रूरता तथा हत्या से भी ड़रता है। जतीन दा शशांक को बीस साल न्याय के लिए झगड़नेवाले शीर्षेन्दु की कहानी बताता है तब शशांक को "अगले ही क्षण उसके दिमाग में सिनेमा, टी.वी., अखबारों में देखी-पढ़ी दंगे-फसाद-हत्याओं की खबरें घूम गई।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 70
2. वही, पृष्ठ - 218

वाकई आदमी शायद बहुत क्रूर है - एकदम राक्षसों की तरह। शशांक के दिल में अजीब तरह की घबराहट होने लगी।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि शशांक एक डरपोक लड़का है।

4.3.1.1-6 जिज्ञासु

जिज्ञासु का मतलब है जानने की इच्छा रखनेवाला। हर मनुष्य में किसी न किसी बात को जानने की इच्छा होती है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास का नायक शशांक भी इसके लिए अपवाद नहीं है। शशांक के दादाजी जब व्यापार के सिलसिले में बाहर जाते हैं तब दादी को अकेलापन का जीवन जीना पड़ता है। लेकिन शशांक अपनी जिज्ञासा प्रकट करते हुए पूछता है - ''तो दादाजी जब यहाँ रहते, तुम्हें कहीं घुमाने नहीं ले जाते थे? पिक्चर-विक्चर? खाने-पीने?''[2] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि शशांक एक जिज्ञासु लड़का है।

4.3.1.1-7 अकेला

मनुष्य समाजप्रिय प्राणी है। समाज व्यष्टि से बना है। मनुष्य जब अकेला जीवन-यापन करता है तब उसे अनेक कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास का शशांक को भी हमेशा अकेलेपन की समस्या का सामना करना पड़ता है। एक दिन शशांक क्लास में कविता पढ़ता है तब उसे यह उम्मीद थी कि कोई-न-कोई आकर कविता की प्रतिक्रिया देगा लेकिन उसके पास कोई नहीं आता, ''वह हमेशा से भी ज्यादा अकेला हो जाता है।''[3]

4.3.1.1-8 क्रोधी

हर मनुष्य में क्रोध की प्रवृत्ति होती है। लेकिन वह प्रसंगानुरूप ही उभरकर सामने आती है। प्रस्तुत उपन्यास के नायक शशांक में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है। शशांक को जब 'मैथ्स' का पेपर कठीन लगता है तब वह पसीना-पसीना हो जाता है। माँ उसके पास आकर देखती है कि उन्होंने पिछला लिखा सवाल काट दिया था। तब माँ उसे कहती है कि फेल होना है तुम्हें, इसी कारण मैंने इतनी जान लगाई थी? तब शशांक को गुस्सा आता है और वह अपने पेपर का पन्ना फाड़ डालता है। अत: कहना गलत न होगा कि शशांक क्रोधी लड़का है।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 207
2. वही, पृष्ठ - 63
3. वही, पृष्ठ - 41

4.3.1.1-9 मित्र

वस्तुत: हर मनुष्य के जीवन में अपने मित्र की अहम् भूमिका होती है। शशांक का एकमात्र दोस्त है आर्थर। वह उसे चिढ़ाता भी है और सारा दिन स्कूल में उसी के साथ रहता है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास में लेखिका लिखती है - "वही आर्थर, जो उसके डगमगाकर चलने और हकलाकर बोलने की जब-तब नकल उतारकर उसे चिढ़ाता है, पर वही, जो उसका एकमात्र दोस्त है। जो अगर न होता तो उसके जीवन में एक बहुत बड़ा छेद होता जिसमें से स्कूल का सारा दिन इस तरह गिरकर निकल जाता जैसे कभी था ही नहीं। आर्थर है तो स्कूल है। वह न होता तो न जाने क्या होता। कम-से-कम कोई ऐसा तो न होता जिसे 'पोटॅटो इन जैकेट' कहकर चिढ़ा सकता। यानी कि किसी तरह चिढ़ा सकता।"[1] स्पष्ट है कि आर्थर शशांक का गहरा मित्र है।

4.3.1.1-10 असाध्य बीमारियों का सामना करनेवाला

शशांक बचपन से ही असाध्य बीमारियों का सामना करता रहा है। जब शशांक एक दिन स्कूल के लंच ब्रेक की छुट्ठी में बेहोश होकर गिर पड़ता है तब शशांक की माँ शशांक को देखने आए हुए हर आदमी से पूछती है - "क्यों ऐसा हुआ। कैसे हो गया? एक मामूली बुखार से? एम.आर.आई. में तो कुछ नहीं आया था। बुखार का इलाज शुरू करने में तो बिलकुल देर नहीं हुई थी। बुखार होते ही खून की जाँच करवाई। तुरंत दवा शुरू की। फिर? क्यों ऐसा हुआ? क्यों? इस क्यों का जवाब किसी के पास नहीं है। पापा कहते हैं कि इसलिए हुआ कि जिस वायरस ने उसे काटा वह मामूली नहीं था। दुर्भाग्य था खुद वायरस के रूप में।"[2] उक्त उद्धरण से स्पष्ट होता है कि शशांक असाध्य बीमारियों का सामना करनेवाला है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि प्रस्तुत उपन्यास में शशांक अपाहिज, दूसरों की चिंता करनेवाला, स्वावलंबी बनने की छटपटाहट, जिद्दी, जिज्ञासु, अकेलापन, क्रोधी, मित्र और असाध्य बीमारियों का सामना करनेवाला आदि विशेषताओं से युक्त परिलक्षित होता है।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 18-19
2. वही, पृष्ठ - 125

4.3.2 गौण पात्र -

गौण पात्र के रूप में शशांक की माँ अर्थात् मिसेज चौधरी और शशांक का मित्र आर्थर का चित्रण प्रमुख है। उनका विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

4.3.2.1 मिसेज चौधरी :-

प्रस्तुत उपन्यास का नायक शशांक के बाद उसके माँ का चरित्र महत्त्वपूर्ण है। उन्हें शशांक के अलावा एक बेटी भी है जिसका नाम है अदिती। वह पेशे से वकिल है। वह हर वक्त अपने बेटे की खुशी चाहती है। शशांक की माँ का नाम मिसेज चौधरी है। वह दिन-रात शशांक की ही चिंता करती रहती है। वह अपने पति से भी शशांक के सिवाय कोई बात नहीं करती। स्वयं शशांक की माँ के शब्दों में - ''तुम्हारे पूरे बचपन में हम दोनों ने कभी आपस में इस तरह कोई बातें नहीं की जैसे दुनियाँ में पति-पत्नी करते होंगे। असल में हमारे पास तुम्हारे सिवाय बात करने के लिए और कोई टॉपिक ही नहीं था। हमारे दिमाग में तुम-ही-तुम थे।''[1] स्पष्ट है कि शशांक के माँ-पापा शशांक को लेकर चिंतित हैं। वे हमेशा शशांक को लेकर ही बात करते हैं। शशांक की माँ की शिकायत है कि उसे शशांक के पापा का सहारा नहीं मिला। वह चाहती है कि पुरूष ने मजबूत रहकर स्त्री को सहारा देना चाहिए। इस बारे में जतीन दा शशांक से कहते हैं - ''तुम्हारी माँ क्यों ऐसा सोचती है कि पुरूष को ही अधिक मजबूत होना चाहिए और उसे स्त्री को सहारा देना चाहिए? ऐसा भी तो हो सकता है कि तुम्हारे पापा को हमेशा लगा हो कि तुम्हारी माँ बहुत मजबूत है और उसे किसी तरह के सहारे की जरूरत नहीं।''[2]

शशांक अपाहिज होने के कारण वह अच्छी तरह से चल नहीं सकता है। वह दूसरों की तरह बोल भी नहीं सकता है। वह हकलाता हुआ बोलता है और डगमगाते हुए चलता है। लेकिन एक दिन अचानक वायरस के बुखार के कारण दुर्भाग्यवश उसका चलना और बोलना भी बंद होता है। तब शशांक की माँ उसके पहले जैसा ठीक होने में ही अपने जीवन की खुशियाँ मानती है। जब पंडितजी की लड़की सुमनबाई शशांक का भविष्य बताती है कि शशांक पहले जैसा ठीक हो जाएगा तब माँ कहती है - ''पहले जैसा हो जाए बाई, तो मैं समझूँगी कि मेरे जीवन की सारी इच्छाएँ पूरी हो गई।''[3] कहना आवश्यक नहीं कि शशांक की

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 92
2. वही, पृष्ठ - 92
3. वही, पृष्ठ - 191

माँ शशांक पहले जैसा क्यों न हो लेकिन उसे ठीक करने में ही अपने जीवन का लक्ष्य मानती है। वह शशांक को स्कूल जाने के लिए व्हिल चेयर खरीदती है। उसे स्कूल भेजकर, स्कूल में शशांक से संबंधित दिल को छुनेवाला भाषण देती है। उसकी लिखने की गति कम होने के कारण उसे टाइपराइटर से परीक्षा देने की इजाजत लेती है। वह हिम्मत न हारनेवाली नारी है। शशांक की माँ जिद्दी है। साथ ही वह ईश्वर के प्रति आस्था रखनेवाली भी है। इसी कारण वह काम से छुट्टी निकालकर सात दिन भागवत कथा मन लगाकर सुनती है।

शशांक की माँ कभी-कभी विद्रोही भी बन जाती है। जब माँ और चाची दोनों मिलकर, घंटों मेहनत करके रंगोली सजाते हैं और नहा-धोकर अपनी मेहनत का रंग देखने आती है, तब वह देखती है कि नटकू कपूर के बच्चों ने फिरकियों से रंगोली को जगह-जगह काला कर दिया था तब वह आग-बबूला होकर कपूर पर बरस पड़ती है। इस संदर्भ में प्रस्तुत उपन्यास की दादी का कथन द्रष्टव्य है - ''माँ एकदम आग-बबूला होकर कपूर पर जमकर बरस पड़ी थी और बड़ी मुश्किल से दादी त्योंहार के दिन झमेला न करने की गुहार कर माँ को घर के अंदर लाई थी।''[1] स्पष्ट है कि शशांक की माँ विद्रोही भी है।

निष्कर्ष यह कि शशांक की माँ शशांक को ठीक होने में अपने जीवन की खुशियाँ माननेवाली, ईश्वर के प्रति आस्थावान, जिद्दी, हिम्मत न हारनेवाली तथा विद्रोही नारी है। कहना आवश्यक नहीं कि लेखिका ने मिसेज चौधरी का चरित्र कलात्मकता से अंकित किया है।

4.3.2.2 आर्थर :-

'कोई बात नहीं' उपन्यास में शशांक के बाद आर्थर का चरित्र महत्त्वपूर्ण है। आर्थर शशांक का एक मात्र दोस्त है, जो अँग्लो-इंडियन है। वह गेहुएँ रंग का है। एक ओर वह शरीर से दुर्बल है तो दूसरी ओर पढ़ने में कमजोर है। उसके पास हट्टाकट्टा शरीर नहीं है। वह किसी से पंगा ले सकता। वह हर वक्त हँसने या हँसाने का बहाना खोजता रहता है। प्रस्तुत उपन्यास का विलियम, आर्थर की दुर्बलता के बारे में कहता है - ''एक बॉक्सिंग खाएगा, तो आलू की तरह लुढ़ककर कहीं दूर जा गिरेगा। आर्थर तब भी मुस्कुराता रहा था और बाद में भी आ-लू, ओह - नो, आ - र्थ - र कहकर लड़कों के छेड़ने पर भी उसी तरह मुस्कुरा देता था।''[2] विलयम के उक्त कथन से स्पष्ट है कि आर्थर दुर्बल और हँसमुख स्वभाव का है।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 83
2. वही, पृष्ठ - 28

आर्थर पढ़ाई में कमजोर लड़का है। किसी भी विषय में फेल होने पर उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे कलकत्ते के पुराने और सबसे नामी सेंट जोसेफ स्कूल में अपने 'धर्म-विशेष' के कारण ही ॲडमिशन मिला था। आर्थर के पिता बंबई के आस-पास नौकरी करते हैं। साल में एक-दो बार उससे मिलने आते हैं। उसकी माँ किसी स्कूल में पढ़ाती है लेकिन शायद वह उसकी अपनी माँ नहीं है। उसे एक बड़ी बहन भी है जो लिपस्टिक - पाउडर लगाए टिपटॉप रहती है परंतु उसकी तुलना में आर्थर 'फटेहाल' रहता है।

आर्थर शशांक का एकमात्र दोस्त है। वह स्कूल में हर वक्त शशांक के साथ रहता है। शशांक आर्थर और उसकी गहरी दोस्ती के बारे में कहता है - "हमारा हँसना-बोलना, मजाक, छेड़छाड़, हमारी छोटी-छोटी खुशियाँ, एक संग पानी पीने जाना। हर सुबह हमारा इंतजार कि दूसरा अभी तक स्कूल क्यों नहीं आया। हमारा हर दिन सुबह स्कूल आना, बिना यह चाहे कि काश आज छुट्टी होती। यह सब जतीन दा की थीसिस में कहा है? क्या और किन्हीं दो लड़कों के, जो कमजोर नहीं हैं, दोस्ताने में इससे ज्यादा दोस्ती होती है? इससे ज्यादा हँसी-खुशी होती है ?"[1] कहना आवश्यक नहीं है कि आर्थर शशांक का गहरा दोस्त है। स्कूल में वे दोनों एक साथ रहते हैं।

निष्कर्षत: कहना गलत नहीं होगा कि आर्थर अँग्लो-इंडियन, दुर्बल शरीर का, पढ़ाई में कमजोर, गेहूँ रंग का, हँसमुख स्वभाव का तथा शशांक का गहरा दोस्त के रूप में परिलक्षित होता है।

4.3.3 अन्य पात्र -

प्रस्तुत उपन्यास में गौण पात्र का चित्रण प्रसंगानुरूप मिलता है। शशांक की आरती मौसी, दादी, दादाजी, पापा, चाचा-चाची, उसकी छोटी बहन आदिति, चचेरा भाई अनंत, उसके घर का नौकर रामा, टीचर दुबेजी, शशांक हर शनिवार विक्टोरिया मैदान में मिलने आनेवाले जतीन दा, उसका मित्र जैकसन, पंडित जी की लड़की सुमनबाई, शशांक के स्कूल के हेडमास्टर फादर, बड़े राजा की लड़की जेतल दी, उसकी दो रूपोवाली दासी मनहठी, डॉ. मेहता और डॉ. गांगुली आदि पात्र प्रस्तुत उपन्यास में कलात्मकता से अंकित है।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृष्ठ - 44

अन्य पात्र उपन्यास में प्रसंगानुकूल तथा परिवेशानुकूल कथानक में बीच-बीच में उपस्थित होकर बीच-बीच में ही लुप्त हो जाते हैं। कहना सही होता कि अन्य पात्रों को कलात्मक बनाने में लेखिका सफल रही है।

4.3.4 पात्रों की संख्या में कलात्मकता -

अलका सरावगी के 'कोई बात नहीं' उपन्यास में पात्रों की भीड़ नजर आती है। प्रस्तुत उपन्यास में लगभग डेढ़ सौ पात्र हैं। जो किसी कहानी, किस्से तथा प्रधान कथा वस्तु में प्रसंगवश उपस्थित हुए हैं। ये पात्र कहीं-न-कहीं अपना संकेत देते रहते हैं। प्रधान पात्र या गौण पात्रों के माध्यम से उपन्यास में कलात्मकता अंकित की हुई परिलक्षित होती है। वैसे देखा जाय तो उपन्यास में पात्रों की भीड़ होने के बावजूद भी प्रधान तथा मुख्य पात्रों को अत्यंत बेबाकी से चित्रित कर लेखिका ने औपन्यासिक कलात्मकता अंकित की है। अत: कहना सही होगा कि लेखिका ने उपन्यास के पारंपारिक ढाँचे को तोड़कर पात्र संख्या की दृष्टि से पात्रों की भरमार होने के बावजूद भी उपन्यास को कलात्मक बनाया है इसमें संदेह नहीं।

4.3.5 पात्रों के चयन में कलात्मकता -

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों का चयन सतर्कता से किया हुआ है। इस उपन्यास के पात्र के चयन में वैविध्य नजर आता है। इस उपन्यास के पात्र समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेखिका ने समाज के हर वर्ग के पात्रों का चयन कर चरित्र सृष्टि का सृजन किया है। कुछ पात्र सामाजिक समस्याओं को लेकर उपस्थित होते हैं। उपन्यास में समस्याओं में भी भिन्नता होने के कारण पात्र समाज के हर वर्ग से संबंधित दिखाई देते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में शिक्षित-अशिक्षित, अमीर-गरीब, पंडे-पुजारी, वकिल, अध्यापक, साहित्यकार, ज्योतिषी, पुलिस, नौकर-चाकर, रानी-दासी, समाज में दो मुखौटेबाज व्यक्ति, नारी पात्र तथा पुरूष पात्र आदि पात्रों का चयन कलात्मकता से किया है। इन पात्रों का उपन्यास में परिवेशानुकूल तथा प्रसंगानुकूल चयन हुआ है। सार यह कि लेखिका ने समाज के हर वर्ग के पात्रों को चुनकर पात्र चयन में कलात्मकता सिद्ध की है।

4.3.6 चरित्र चित्रण में कलात्मकता -

'कोई बात नहीं' उपन्यास के चरित्र-चित्रण भी कलात्मक हैं। नारी को तत्कालीन समय के अनुसार चित्रित कर नारी-मुक्ति की माँग की है। प्रस्तुत उपन्यास की दादी अपने पर कितना भी अन्याय क्यों न हो लेकिन वह पूरे उपन्यास में मौन-मुख रहती है। इसका कारण यह है कि भारतीय पुरूष की पुरूषी मानसिकता। समाज में दो मुखौटेबाज आदमी की पोल प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से खोल दी है। वर्तमान समाज में अपाहिज तथा हकलाते हुए बोलनेवाले लड़के के रूप में नायक शशांक को चित्रित कर, उनकी स्थिति तथा उनकी समस्याएँ, समाज का उनके प्रति देखने के दृष्टिकोण को चित्रित किया है।

नायक शशांक के माध्यम से लेखिका ने हार न मानने की प्रेरणा दी है। शशांक अपने जीवन में आई हुई हर मुसीबत का सामना कर स्वावलंबी बनने की चाह रखता है। उसका 'कोई बात नहीं' मंत्र मनुष्य को जीवन जीने की प्रेरणा देता है। उपन्यास के पात्र अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व कर समाज के सम्मुख आते हैं। कहना आवश्यक नहीं कि प्रस्तुत उपन्यास का चरित्र-चित्रण कलात्मक से अंकित किया है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि शशांक अपाहिज, दूसरों की चिंता करनेवाला, स्वावलंबी बनने की छटपटाहट, जिद्दी, जिज्ञासु, अकेलापन, क्रोधी, मित्र और असाध्य बीमारियों का सामना करनेवाला आदि गुणों से युक्त नजर आता है। गौण पात्र के रूप में शशांक की माँ जो हर वक्त अपने बेटे का खयाल करनेवाली, ईश्वर के प्रति आस्थावान, जिद्दी, विद्रोही और हिम्मत न हारनेवाली नारी है। गौण पात्र में दूसरा पात्र है आर्थर जो शशांक का मित्र, एंग्लो इंडियन, दुर्बल शरीर का, पढ़ाई में कमजोर, गेहूएँ रंग का, हँसमुख स्वभाव के रूप में चित्रित हुआ है। अन्य पात्र में अनेक पात्रों का जिक्र प्रसंगवश मिलता है।

लेखिका ने संख्या की दृष्टि से भरमार होते हुए भी कुछ पात्रों के माध्यम से कलात्मकता अंकित की है। पात्र चयन में लेखिका ने समाज के हर वर्ग के पात्रों को चुना है। अंत में कहना सही होगा कि पूरा चरित्र-चित्रण कलात्मकता से अंकित किया है इसमें संदेह नहीं।

4.4 समन्वित निष्कर्ष :

'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास के चरित्र-सृष्टि का मूल्यांकन करने के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं -

इस उपन्यास का नायक किशोरबाबू माँ से प्रेम करनेवाला, नेतृत्व-संपन्न, भविष्य के प्रति सजग, मेहनती, स्वाभिमानी, देशप्रेमी, जिज्ञासु, जिद्दी, डरपोक, मित्र, दिल का मरीज तथा दकियानूसी मानसिकता आदि गुणों से परिपूर्ण है। गौण पात्र के रूप में अमोलक और शांतनु हैं। अमोलक गांधीवादी, अध्ययनशील, समाज सेवक अर्थात् सेवाभावी, दूरदृष्टि रखनेवाला और अहिंसावादी आदि विशेषताएँ उनके व्यक्तित्व में परिलक्षित होती हैं। शांतनु मेहनती, अंधश्रद्धा का विरोधी, लालची, पूँजीपति तथा सुभाषबाबू का समर्थक है। अन्य पात्र अपनी अपनी विचारधाराएँ लेकर प्रकट होते हैं। पात्र संख्या की दृष्टि से भरमार होने के बावजूद भी कुछ पात्रों के माध्यम से लेखिका ने उपन्यास में कलात्मकता अंकित की है। पात्रों के चयन में समाज के हर वर्ग के पात्रों का चयन किया हुआ दिखाई देता है। पात्र चरित्र-चित्रण में भी कलात्मकता है। उपन्यास में किशोरबाबू, अमोलक तथा शांतनु आदि प्रतीक पात्र हैं। किशोरबाबू के माध्यम से लेखिका स्पष्ट करना चाहती है कि जिस प्रकार किशोरबाबू अपने जीवन में आई हुई समस्या 'बाइपास' के मार्ग से हल करते है उसी प्रकार हर इन्सान को अपने जीवन में आई हुई समस्याओं को हल करना चाहिए। अमोलक के माध्यम से लेखिका गांधीवादी विचारों को दोहराकर समाज को गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता बताना चाहती है। लेखिका यह भी बताना चाहती है कि अहिंसा का मार्ग व्यक्ति को सही राह पर ले जानेवाला मार्ग है। शांतनु के माध्यम से लेखिका ने समाजसेवा के नाम पर अकूत धन कमानेवाली लालची तथा पूँजीपति लोगों की पोल खोल दी है। अंत में कहना सही होगा कि 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास चरित्र सृष्टि की दृष्टि से सफल तथा कलात्मक उपन्यास है इसमें संदेह नहीं।

अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में चरित्र-सृष्टि का उचित निर्वाह हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका रूबी दी समाज-सेविका, जिद्दी, दु:ख तथा पीड़ा को भोगनेवाली, प्रतिभाशाली, जिज्ञासु, अकेलापन, प्रेमिका तथा उदारता आदि विशेषताएँ उनके

व्यक्तित्व में दृष्टिगत होती हैं। अनवरत अपने जीवन में कष्ट या दु:ख को भोगनेवाली तथा पिता, भाई और पति द्वारा प्रवंचित सविता अपने अधिकार तथा न्याय के लिए संघर्ष करनेवाली नारी है। रूबी दी की नातिन कादम्बरी समझदार, संवेदनशील, प्रतिभासंपन्न, घुमक्कड़, चिंतनशील तथा दूसरों का आदर करनेवाली आधुनिक विचारों की लड़की है। अन्य पात्र बीच-बीच में आते हैं और प्रधान पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालकर बीच में ही लुप्त हो जाते हैं। पात्र संख्या की दृष्टि से भरमार होने के बावजूद भी कुछ नारी पात्रों द्वारा उपन्यास की कलात्मकता बनाई है। पात्र चयन में समाज की लेखिका ने ज्यादातर नारी पात्रों को चुना है। ये नारियाँ समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं। चरित्र-चित्रण में वैविध्य नजर आता है। अत: कहना सही होगा कि 'शेष कादम्बरी' उपन्यास चरित्र सृष्टि की दृष्टि से कलात्मक प्रतीत होता है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास का शशांक अपाहिज, दूसरों की चिंता करनेवाला, स्वावलंबी बनने की छटपटाहट, जिद्दी, जिज्ञासु, अकेलापन, क्रोधी, मित्र और असाध्य बीमारियों का सामना करनेवाला है। गौण पात्रों में शशांक की माँ और शशांक का मित्र आर्थर का चरित्र महत्त्वपूर्ण है। शशांक की माँ हर वक्त अपने बेटे का खयाल रखनेवाली, ईश्वर के प्रति आस्थावान, जिद्दी, विद्रोही और हिम्मत न हारनेवाली नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है। आर्थर जो शशांक का एकमात्र दोस्त, दुर्बल शरीर का, पढ़ाई में कमजोर, गेहूँएँ रंग का, हँसमुख स्वभाव का एंग्लो-इंडियन लड़का है। अन्य पात्रों का जिक्र प्रसंगवश और यथास्थान मिलता है। पात्र संख्या, पात्र चयन तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास कलात्मक है। लेखिका शशांक के माध्यम से मनुष्य जीवन की जिजीविषा प्रकट करती है। शशांक का चरित्र नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है।

अंत में कहना सही होगा कि अलका सरावगी के उपन्यास चरित्र सृष्टि की दृष्टि से कलात्मक है ।

* * * *